National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(60): 144-146
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. विचारी लाल मीना
सहायकाचार्य, शिक्षा,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली- 110016

Correspondence:
डॉ. विचारी लाल मीना
सहायकाचार्य, शिक्षा,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली- 110016

भारतीय ज्ञान परम्परा में नैतिक मूल्य

डॉ. विचारी लाल मीना

सारांश-

भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और गहन है। इस परम्परा में न केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन को महत्व दिया गया है, बल्कि नैतिक मूल्यों को भी जीवन का अभिन्न अंग माना गया है। भारतीय संस्कृति का मूल उद्देश्य व्यक्ति के आंतरिक विकास के साथ-साथ समाज में समरसता और धर्म की स्थापना रहा है। इसमें नैतिक मूल्यों की शिक्षा वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, भगवद्गीता, स्मृतियों, पुराणों और अन्य ग्रंथों में विस्तार से की गई है।

मुख्य शब्द- भारतीय ज्ञान परम्परा, नैतिक मूल्य, सत्य, अहिंसा, क्षमाशीलता, परोपकार, त्याग, न्याय इत्यादि

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान परम्परा अत्यन्त प्राचीन एवं समृद्ध हैं। जिसकी शुरुआत वैदिक काल से ही मानी जाती हैं। वेद न केवल ज्ञान का भंडार हैं। बल्कि नैतिकता एवं मानव मूल्यों के आदि एवं विस्तृत स्रोत हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा हमें सदाचारी, व्यावहारिक एवं समाज के उपयोगी बनाती हैं। व्यक्ति एवं समाज को सही मार्ग दिखाने के लिए वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, जैन बौद्ध दर्शन, नीति शतक, हितोपदेश, पंचतंत्र जैसी रचनाएँ हुई।

ऐसी रचनाएँ पश्चिमी एवं अरबी साहित्य में नहीं मिलती।

हम दण्ड या कानून के द्वारा किसी को तात्कालिक या बाह्य रूप से नियंत्रित किया जा सकता हैं। किन्तु नैतिकता मानव को स्थायी एवं आन्तरिक रूप से नियंत्रित करता हैं। भारत के सभी धर्मों एवं साहित्यों में समाज को बेहतरीन बनाने के लिए नैतिकता एवं मानव मूल्यों का विस्तृत वर्णन मिलता हैं। जिनके अध्ययन एवं अनुपालन से व्यक्ति जीवन को व्यवस्थित एवं उपयोगी बना सकता हैं। नैतिकता एवं मानवीय मूल्य भारतीय ज्ञान परम्परा के अभिन्न अंग हैं। वेद, पुराण, महाभारत, उपनिषद्, रामायण, दर्शन आदि ग्रन्थ नैतिकता से भरपूर है। नैतिकता सिर्फ सैद्धान्तिक ही नहीं बल्कि व्यावहारिक भी होती है। केवल ज्ञानवान बनने से ही व्यक्ति महान नहीं होता हैं। बल्कि नैतिकता एवं मूल्य यूक्त जीवन से ही व्यक्ति महानता के गुणों की और अग्रसर होता हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा में नैतिक मूल्यों का अत्यधिक महत्व हैं। यहाँ पर कुछ नैतिक मूल्य इस प्रकार हैं।-

1. सत्य-

सत्य को भारतीय संस्कृति में परम धर्म माना गया है। "सत्यमेव जयते" (सत्य की ही जीत होती है)। उपनिषदों में सत्य को ब्रह्म (ईश्वर) के समकक्ष बताया गया है।

सत्य को सर्वोच्च मूल्य माना गया हैं।

सत्यं वद, धर्म चर[1]

सत्य बोलो और धर्म का आचरण करों।

सत्यमेव जयते नानृतम[2]

सत्य की ही विजय होती है झुठ की नहीं।

'न हि सत्यात् परो धर्मः'[3]

सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं

राजा हरिशचन्द्र जिन्होंने सत्य के लिए अपना राज्य और परिवार त्याग दिया।

2. अहिंसा-

अहिंसा परमो धर्मः[4]

भारतीय ज्ञान परम्परा में अहिंसा को सर्वोच्च मूल्य के रूप में माना गया हैं। जो हिंसा से दूर रहने एवं सभी जीवों के प्रति दया रखने पर जोर देता है। जो व्यक्ति सभी प्राणीयों में परमात्मा को देखता हैं। वह किसी को हानि नहीं पहुचाता हैं।-

महात्मा गाँधी ने अहिंसा के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम लड़ा

3. धर्मः-

धर्म के मार्ग पर चलते हुए सही कर्म करना और अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। क्योंकि जो व्यक्ति धर्म को नष्ट करता हैं धर्म भी उसे नष्ट कर देता है। और धर्म की रक्षा करने पर वह हमारी रक्षा करता हैं।

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः।

तस्मात् धर्मो न हन्तव्यः मा नो धर्मो हतोऽवधीत्।।[5]

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जून को धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरण दी।

4. संतोषः-

इच्छाओं पर नियंत्रण रखना और जो हमारे पास है उसी में सुखी रहना।

संतोषः परम सुखम्[6]

महर्षि दधिची ने देवताओं के लिए अपनी हड्डियाँ दान कर दी थी

5. परोपकारः-

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः[7]

यः परार्थं स्वयम् व्यक्त्वा योऽपि जीवति मानवान्।

स एव देवदेवेषु पूज्यते न तु मानवः।।[8]

जो व्यक्ति दुसरों के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर जीवन व्यतीत करता हैं। वही देवताओं के समान पूजनीय होता है।

6. त्यागः-

जिस प्रकार राजा शिबी ने एक कबुतर की रक्षा के लिए अपने शरीर का माँस देने के लिए तैयार हो गए थे। व्यक्तिगत इच्छाओं ओर लाभो का त्याग करना-

"न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।

यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते।।"

(भगवद्गीता, अ.18, श्लो.11)

श्रीराम ने भी अपने सभी सुखों का त्याग कर दिया था। सीता और लक्ष्मण ने भी राजमहलों का त्याग कर दिया।

7. दया-

भारतीय ज्ञान परम्परा में दया को मानव जीवन का महत्वपूर्ण नैतिक मूल्य माना गया है। जो दूसरों के दुःख में शामिल होने और उनकी मदद करने पर बल देता है-

"दया धर्मस्य मूलं हि, पापस्य तु विपर्ययः।।"

(महाभारत, वनपर्व 297.35)

"अहिंसा सत्यम् अक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।"

(मनुस्मृति 6.92)

8. न्याय-

भारतीय ज्ञान परम्परा में न्याय को सामज की स्थिरता और शांति के लिए आवश्यक माना गया हैं जो कमजोर और पीड़ितों की रक्षा करने और सभी के साथ निष्पक्ष व्यवहार करने पर जोर देता हैं-

"धर्मेणैव हि पापानि न हन्यन्ति कदाचन।

धर्मेण पालयेद्राष्ट्रं न तु दण्डेन केवलम्।।

(मनुस्मृति 8.15)

"न्याय्यं य पालयेद्राज्ञः स एव परमेश्वरः।

अन्याय्यं यः समारभ्य न स किञ्चिदवाप्नुयात्।।"

9. क्षमाशीलता-

दूसरों की गलतियों को क्षमता करने की शक्ति। रामायण में श्रीराम ने विभीषण को क्षमता किया और उसे लंका का राजा बनाया। क्षमा शक्तिशाली व्यक्तियों का आभूषण हैं। क्षमा के द्वारा ही महान पुरुषों को ऊँचा स्थान मिलता है-

क्षमा बलं अशक्तानां शक्तानां भूषणं क्षमा।

क्षमा वशीकृते लोके क्षमयैव महतां पदम्।।[9]

10. समत्व भावः-

सभी को समान दृष्टि से देखना और भेदभाव नहीं करना।

भगवान श्रीकृष्ण ने सुदामा को गले लगाया।

श्रीराम जी ने शबरी के झुठे बेर खाये।

रामायण में राम के चरित्र में सत्य, धर्म, न्याय और कर्त्तव्यनिष्ठ जैसे नैतिक मूल्यों को दर्शाया गया है।

महाभारत- महाभारत में धर्म, न्याय, और कर्त्तव्यनिष्ठ के महत्व में दर्शाया गया है।

पंचतंत्र- पंचतंत्र में नैतिक शिक्षाएं और कहानियों के माध्यम से बच्चों को अच्छे और बुरे का अन्तर करने और नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है।

कादम्बरी- बाणभट्ट की रचना कादम्बरी में नैतिक मूल्यों का वर्णन है। जो त्याग, प्रेम और कर्त्तव्यनिष्ठ की शिक्षा प्रदान करती है।

निष्कर्ष-

भारतीय ज्ञान परम्परा में नैतिक मूल्य केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक, पारिवारिक और वैश्विक जीवन में भी संतुलन बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। ये मूल्य व्यक्ति को सच्चरित्र, समाज को संगठित और राष्ट्र को समृद्ध बनाते हैं। भारतीय ज्ञान परम्परा में नैतिक मूल्यों का महत्वपूर्ण स्थान है। जो भारतीय संस्कृति को समृद्ध करता है और मानव जीवन को दिशा प्रदान करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रामायण – महर्षि वाल्मीकि
2. भगवद्गीता- श्रीकृष्ण (व्यास द्वारा संकलित)
3. महाभारत – वेदव्यास
4. मनुस्मृति – महर्षि मनु
5. हितोपदेश/पंचतंत्र – नारायण दत्त/विष्णु शर्मा
6. उपनिषद – विभिन्न ऋषि

पाद टिप्पणी : -

1 तैत्तिरीयोपनिषद
2 मुण्डकोपनिषद
3 महाभारत, उद्योग पर्व
4 महाभारत, अनुशासन पर्व
5 महाभारत वन पर्व
6 हितोपदेश
7 सुभाषित
8 महाभारत, अनुशासनपर्व
9 महाभारत, उद्योग पर्व